P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-7* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

राजा रवि वर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

पूनम कुमारी
व्याख्याता,
व्यावसायिक कला विभाग,
फतहचन्द महिला महाविद्यालय,
हिसार

सारांश

राजा रवि वर्मा का उदय ऐसे समय में हुआ जब पहाड़ी तथा मुगल शैलियों की ऊर्जा प्रायः समाप्ति की ओर थी। अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर की मृत्यु से मुगल साम्राज्य का सूर्यास्त हो गया और अंग्रेजी साम्राज्य का सूर्योदय। अंग्रेजी साम्राज्य की जड़े मजबूत होने से भारत में पाश्चात्य संस्कृति का फैलाव होने लगा। मशीनीकरण व औद्योगिकीकरण ने भारत की स्थानीय कला को गहरा आघात पहुंचाया था। पहाड़ी कला केवल उन पहाड़ी क्षेत्रों तक सीमित रह गई थी। जो यूरोपीय प्रभाव से अछूते थे। 18वीं सदी के मुगल शैली के चित्रकारों की कला में यूरोपीय तत्वों का बहुत अधिक मिश्रण होने की वजह से एक नई शैली का जन्म हुआ जो कम्पनी शैली के नाम से विख्यात हुई। भारतीय कलाकार कम्पनी स्कूल के अधीन एक मिश्रित तकनीक में कार्य करने को मजबूर थे। ऐसे परिवेश में रवि वर्मा अपने धार्मिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथानकों से निस्सृत कलाकृत्तियां लेकर कला जगत में अवतरित हुए और प्राचीन केरल के किलीमन्नूर राजघराने की सांस्कृतिक परम्परा को कलात्मक अभिरूचि से अभिराम वर्ण सौष्ठव के माध्यम से जीवन्त बना दिया।

मुख्य शब्द : व्यक्तित्व, कृतित्व, औद्योगिकीकरण, कलाकृतियाँ।

प्रस्तावना

रवि वर्मा का जन्म त्रावणकोर 29 अप्रैल 1848 ई0 को केरल के किलीमन्नूर गांव में त्रावणकोर ऐसे सुसंस्कृत परिवार में हुआ जिसके त्रावणकोर राजघराने से निकट के सम्बन्ध थे।[1] इनके पिता का नाम श्री एज्डुमविल नीलकंठन प्रथा माता का नाम श्रीमती उमायम्बा थम्बुरति बाई था।[2] पाँच वर्ष की छोटी सी आयु में ही उन्होने अपने घर की दीवरों को दैनिक जीवन की घटनाओं से चित्रित करना प्रारम्भ कर दिया था। उनके चाचा राजराज वर्मा जो एक सुप्रसिद्ध कलाकार थे ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और कला की प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान की। एक बार उनके चाचा राजराज वर्मा किसी राजभवन की दीवार पर कोई चित्र बना रहे थे। चित्र बनाते समय चित्र को अधूरा छोड़कर उन्हें किसी कार्य से बाहर जाना पड़ा लौटकर आए तो देखते हैं कि बालक रवि वर्मा ने उस चित्र को पूर्ण कर दिया। उस समय रवि वर्मा की आयु 14 वर्ष थी। कलाकार राजराज वर्मा समझ गए कि ये अवश्य ही एक प्रसिद्ध कलाकार बन सकते है। चौदह वर्ष की आयु में वे उन्हें तिरूवनतपुरम ले गए। वहाँ उनकी कला दीक्षा सुप्रसिद्ध चित्रकार आलागिरी नायडू के निर्देशन में हुई जो स्वयं त्रिवेन्द्रम के राज कलाकार एवं तंजौर शैली में दक्ष थे। थियोडोर जेनसन नामक डच मूल के ब्रिटिश चित्रकार महाराजा के निमन्त्रण पर राजदरबार में आए और महाराज कहने पर उन्होंने राजा रवि वर्मा को तैलरंग चित्रण पद्वति की शिक्षा दी।[3] रामास्वामी नायडू ने उन्हें वाटर कलर में प्रशिक्षित किया।

यद्यपि राजा रवि वर्मा ने किसी कला महाविद्यालय अथवा किसी संस्थान से कला की विधिवत शिक्षा प्राप्त नहीं की थी तथापि अपनी अनवरत कला साधना अनथक लगन, राज परिवारों के सहयोग एवं विकसित कला दृष्टि के कारण ही कला क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की।

रवि वर्मा के परिवार को प्रदर्शन कलाओं में गहरी रूचि थी। उनकी माता एक कवि और लेखिका थी। जिसकी कृत्ति 'पार्वती स्वयंवरम्' राजा रवि वर्मा ने उनकी मृत्यु के पश्चात् प्रकाशित करवाई थी। बहन मंगला बाई एक चित्रकार। उनके छोटे भाई सी. राजा रवि वर्मा भी चित्रकार थे। उनके पुत्र राम वर्मा ने भी एक चित्रकार के रूप में ख्याति अर्जित की। स्वयं राजा रवि वर्मा में कला के अतिरिक्त साहित्य सृजन की प्रतिभा थी। संस्कृत काव्य 'मानस यात्रा' में उन्होंने अपने यात्रा विवरण लेखनीबद्ध किए थे। राजा रवि वर्मा का विवाह त्रावणकोर की रानी लक्ष्मीबाई की बहन पुरोरूतालीनाल से सन् 1866 में हुआ था।

अध्ययन का उद्देश्य

हर रचना का विधान अपनी सौद्देश्यता के साथ प्रकट होता है! उद्देश्यविहिन रचना कृतित्व की श्रेणी में नहीं आती। अतः राजा रवि वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रस्तुत लेख, कला जगत के पाठकों में फैली तमाम भ्रांतियों को दूर करने की उद्देश्यता को लेकर किए गए प्रयास का ही परिणाम है। चित्रकला के क्षेत्र में राजा रवि वर्मा ने पाश्चात्य व भारतीय चित्र कलाशैली के मिश्रित शैली स्वरूप से जिस साहस के साथ भारतीय सामाजिक व धार्मिक विषयों को जनमानस तक पहुँचाया है वह अविस्मरणीय है। एक कलाकार का एक कलाकार की नजर से देखना ही कला जगत के लिए ज्यादा हितकर व श्रेयष्कर होगा चित्रकला विषय के लिए राजा रवि वर्मा के योगदान व व्यक्ति कर्म की महता के स्वीकारोक्ति ही लेख का मूल उद्देश्य है।

राजा रवि वर्मा ने अपने चित्रों के विषय, वातावरण के निर्माण, प्राचीन धार्मिक कथा प्रसंगों की प्राथमिकता एवं तत्कालीन रहन–सहन, पहनावे आदि के अध्ययन स्वरूप राजस्थान, दिल्ली, कलकत्ता, नाभा, लाहौर, तंजौर, मायावरम तथा श्रीरंगम के तीर्थस्थानों की यात्रा की तथा विभिन्न स्थानों के चित्रकारों से सम्बन्ध स्थापित किए। भारतीय साहित्य, संस्कृति और पौराणिक कथा रामायण, महाभारत आदि और उनके पात्रों का जीवन चित्रण किया। उनकी कृत्तियों की सबसे बड़ी विशेषता हिन्दू महाकाव्यों और धर्मग्रन्थों पर बनाए गए चित्र ही हैं। ऐसा माना जाता है कि सर्वप्रथम राजा रवि वर्मा ने ही हिन्दू देवी देवताओं को व्यक्तिगत रूप प्रदान किया जो वर्तमान समय में भी देखा जा रहा है। इन्होनें वाटर कलर चित्रण भी किया लेकिन प्रसिद्धि आयल कलर तकनीक में ही प्राप्त हुई।

तत्कालीन राजा महाराजाओं तथा उच्च पदस्थ ब्रिटिश शासकों ने राजा रवि वर्मा द्वारा बनाए गए शबीहों (पोर्ट्रेट्स) दरबारी दृश्यों, नारी सौन्दर्य उभारने वाले चित्रों एवं विविध भारतीय पौराणिक आख्यानों पर आधारित कला चित्रों को खूब सराहा एवं उन्हें अपने यहां काम करने का निमंत्रण दिया। रवि वर्मा ने ऐसे प्रायः सभी निमंत्रणों को स्वीकार करते हुए लगन के साथ एक से बढ़कर एक सुन्दर शबीह तथा अन्य कथाचित्र बनाए। तैलरंगों के माध्यम से उन्होंने ड्यूक आफ बकिंघम, लार्ड इक्टहिल तथा उदयपुर के महाराणाओं के अनेक उल्लेखनीय व्यक्ति चित्र निर्मित किए। राजा रवि वर्मा की कलाकृत्तियों को तीन प्रमुख श्रेणीयों में बांटा जा सकता हैः–

1. प्रतिकृति या पोट्रेट
2. मानवीय आकृतियों वाले चित्र
3. इतिहास व पौराणिक घटनाओं से संबंधित चित्र

यद्यपि जनसाधारण में राजा रवि वर्मा की लोकप्रियता पौराणिक व देवी देवताओं के चित्रों के कारण हुई। ऐसा माना जाता है कि तैलरंगों में उनके जैसी सजीव प्रतिकृत्तियां बनाने वाला आज तक कोई दूसरा कलाकार नहीं हुआ। इन्हीं खूबियों के कारण वे अनेकों सम्मानों से विभूषित किए गए।

त्रावणकोर के राजा–रानी का चित्र बनाने पर इन्हें वीर श्रृगाल प्रदान किया गया। 1873 ई0 में ब्रिटिश रेसीडेंट के प्रोत्साहन पर मद्रास में होने वाली चित्र प्रदर्शनी में हिस्सा लिया और प्रथम पुरस्कार जीता। सन् 1875 में जब प्रिंस ऑफ वेल्स त्रिवेन्द्रम आए तो वहां के राजा ने उन्हें रवि वर्मा के बनाए अनेक चित्र भेंट किए। सन् 1876 की मद्रास चित्र प्रदर्शनी में उन्होंने लगातार तीसरी बार प्रथम पुरस्कार जीता। यह पुरस्कार उन्हें 'शकुन्तला पत्र लेखन' नामक चित्र पर मिला। मद्रास चित्र प्रदर्शनी पर उन्हें गर्वनर द्वारा गोल्ड मैडल मिला। सन् 1892 में उन्होंने वियना और शिकागो में होने वाली कला प्रदर्शनीयों में भाग लिया। रवि वर्मा ने प्रदर्शनाथ दस चित्र भेजे और सभी चुन लिए गए। उन्हें इसके लिए एक मैडल व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। उनके चित्रों में उच्च वर्ग की स्त्रियाँ मराठी और पारसी महिलाओं के व्यक्ति–चित्र तथा दरबार की नर्तकियां इत्यादि थे। इन चित्रों में दर्शायी महिलाओं की वेशभूषा और सादगी यूरोपियनों के लिए कुछ नवीनता लिए हुए थी। उन्हें विदेशों में अपने चित्र प्रदर्शित करने वाले प्रथम भारतीय चित्रकार बनने का गौरव प्राप्त है।[4]

उन्होंने 19वीं शताब्दी में शिकागो मे हुआ सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय कला मेला, 'वर्ल्ड कोलम्बियन एग्जीबिशन' मे भारत का प्रतिनिधित्व किया। 19वीं शताब्दी के अंतिम दशक तक उनके चित्रों की मांग इतनी बढ़ चुकी थी कि उसे पूरा करना लगभग असम्भव था। अंत में सन् 1894 में उन्होंने बड़ौदा के दीवान माधवराव की सलाह पर पूना में एक मुद्रणालय स्थापित किया। इस मुद्रणालय (छापेखाने) से मुद्रित चित्र बहुत अच्छे तो नहीं थे परन्तु फिर भी उन्होंने रवि वर्मा की बढ़ती मांग को पूरा किया। मुद्रित अनेकानेक प्रतियों ने रवि वर्मा की कला को घर–घर पहुंचाया जो कलैण्डर कला के नाम से प्रसिद्ध हुई। सन् 1894 में लिथोग्राफिक प्रेस बम्बई में आयात की और उसे जर्मन तकनीशियनों की जिरचर्ड तथा स्लेचर मदद से चलाया। लेकिन यह प्रैस रवि वर्मा के पतन का कारण बनी क्योंकि यहां इनके चित्रों की प्रतिकृत्तियां बनने लगी जो 20–20 रूपये में बिकती थी जबकि इनके चित्रों का मूल्य 2000/–के लगभग होता था। इनके चित्रों की मांग इतनी बढ़ गई कि बम्बई एवं पूना की प्रैस ने भी इनके नाम से नकली चित्र छापने शुरू कर दिए और इनके चित्रों का स्तर गिर गया। हालात यह हो गए कि फुटपाथ पर 2–2 रूपये में इनके चित्र बिकने लगे। यही कारण है कि आनन्द कुमार स्वामी, ई0वी0 हैवेल तथा अन्य कला समीक्षकों ने इन्हें फुटपाथी चित्रकार कहना शुरू कर दिया।। अतः हताश होकर रवि वर्मा ने अपनी प्रैस को बेच दिया।[5] लेकिन इसमें भी संशय है। हाल ही में प्रकाशित फिल्म 'रंग रशिया के अनुसार विवादों से घिरी रवि वर्मा की कृत्तियों के कारण इनकी प्रैस को जला दिया गया था।

रवि वर्मा के चित्रों का संग्रह लक्ष्मी विलास महल बड़ौदा, लगमोहन महल मैसूर, राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय दिल्ली, राजमहल उदयपुर, सालारजंग म्यूजियम हैदराबाद केरल के राजमहलों आदि में है। सन् 1904 ई0 में उन्हें औपनिवेशिक सरकार द्वारा केसर–ए–हिन्द नामक उपाधि प्रदान की गई और ऐसा माना जाता है कि तब से उनके नाम के आगे राजा शब्द जुड़ गया।

रवि वर्मा की शैली के बारे में यह कहा जा सकता है कि उन्होंने किसी नई तकनीक या शैली का प्रतिपादन नहीं किया। भारत में उनके आने से पहले भी तैलरंग से चित्र बनाए जा रहे थे। लेकिन यह शतप्रतिशत सत्य है कि अंगेजों के बढ़ते प्रभाव के समय उन्होंने अपने चित्रों के जरिये भारतीय अध्यात्म और इतिहास को वापिस लोगों तक पहुंचाया। उनकी शैली पर यूरोपीय, खास तौर पर ब्रिटिश Academic Naturalism एवं नाटकीय मंचन का स्पष्ट प्रभाव है। उनके चित्रों में राफेल एवं वर्मीयर जैसे कलाकारों की भी झलक दिखाई पड़ती है। राफेल का छाया प्रकाश हमें रवि वर्मा के चित्रों में देखने को मिलता है लेकिन नकल नहीं। इसी समानता के कारण उन्हें भारत का राफेल भी कहा जाता है।

राजा रवि वर्मा नकल एवं सजीव चित्रण के अंतर को जानते थे और समझते भी थे कि नकल करने वाला कलाकार महान् कृत्तियों की रचना नहीं कर सकता। इसीलिए रवि वर्मा ने राफेल, अंग्र व वर्मीयर जैसे महान चित्रकारों की शैली से प्रभावित होते हुए भी अपनी कृत्तियों का कुछ नए ढंग से प्रस्तुतिकरण किया।

राजा रवि वर्मा के चित्रों में अर्जुन और सुभद्रा, विश्वामित्र–मेनका, सागरमानभंग, सीता और जटायु, इंद्रजीत की विजय, शकुन्तला, गरीबी, नलदमयन्ती, भीष्म प्रतिज्ञा, शन्तिदूत श्रीकृष्ण, चांदनीरात में नारी, मत्स्यगंधी, मैसूर, दरबार, श्रावणकोर, हंसदूत, कंजूस वृद्ध, प्रस्थान, मंदिर में भिक्षादान, उदयपुर का किला, साधु और मेनका, सेवानिवृत सिपाही, वामन अवतार, महिला और दर्पण तथा भारतीय ऐतिहासिक पौराणिक घटनाओं पर अनेक सुन्दर चित्र–चित्रित किए गए।

सागर मानभंग

सागर का गर्वमर्दन करते हुए राम नामक चित्र में उस समय का वर्णन है जब राम लंका पहुँचते हैं और सागर देवता वरूण के प्रति क्रोध प्रकट करते हैं क्योंकि वह उन्हें पुल बनाने में सहयोग नहीं देते। बांयी ओर क्रोधित श्रीराम का चित्रण है। हाथ में तीर कमान लिए हुए चित्रित श्रीराम के वस्त्र हवा में लहलहा रहे हैं। राम की अडिग मुद्रा को विशाल प्रस्तर शिलाओं के सामंजस्य में चित्रित किया गया है। दायीं ओर वरूण तथ उनके सेवक क्रोधित राम को शान्त करने के लिए उनके तरफ आ रहे हैं। उनकी चाल में तीव्रता तथा सागर की उतांग लहरों में असीम गति है। आकृतियों की मुद्राओं में स्वाभाविकता तथा रंग योजना सुन्दर है। (चित्र सं0–1)

गैलेक्सी ऑफ म्यूजिशियन्स

इस चित्र में राजा रवि वर्मा ने भारतीय उपमहाद्वीप की क्षेत्रीय व भौगोलिक भिन्नता में सांस्कृतिक एकीकरण को सुन्दरता से चिन्हित करने का प्रयास किया है। चित्र में भारत के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित ग्यारह सुन्दर महिलाओं का भव्य चित्रण है जो हमें देवात्माओं से घिरे मध्ययुगीन ईसाइयों के पावन समूहों की याद दिलाता है। इस कृति को हम ग्यारह स्त्रियों का सामूहिक व्यक्ति चित्र या ग्यारह व्यक्ति चित्रों का संकलन भी कह सकते हैं क्योंकि चित्र में विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती एकत्रित महिलाओं में किसी आदान–प्रदान या संवाद का अभाव लगता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि चित्र में एकीकरण संयोजन व रूपरेखा के स्तर पर तो है पर भावनात्मक स्तर पर नहीं। चित्र के बायीं ओर हाथों में वाद्ययंत्र लिए कोमल चेहरे वाली केरल की एक महिला दिखाई पड़ती है उसे देखकर ऐसा लग रहा है मानो जैसे वह कोई दिवास्वप्न देख रही हो। चित्र के दाहिनी ओर चित्रित महिला शाही परिवार की कोई नृत्यांग्ना लग रही है जिसकी हस्ट मुद्रा में नर्तकों की सी स्वाभाविक लय है। चित्र के मध्य में गोलाकार चेहरे वाली एक हष्ट–पुष्ट मराठी स्त्री अंकित है, जिसके घुटनों से मुड़े पांव चित्र को गहराई प्रदान करते है। चित्र में एक गर्वीली मुस्लिम महिला को भी चित्रित किया गया है जो अपने आप में मग्न है, एक अंग्रेजी टोप पहने महिला, वायलन बजाती हुई महिला और ऊपर सबसे दाहिनी ओर लगभग छिपी हुई श्यामवर्ण महिला जो चित्र में सामने देख रही है और जिसके चेहरे पर आत्मविश्वास ओर दृढ़ता है। (चित्र सं0–2)

श्रीकृष्ण दूत के रूप में

यह चित्र महाभारत की एक कथा पर आधारित है। इंद्रप्रस्थ के राजसिंहासन को लेकर उठे विवाद के शांतिपूर्ण हल के लिए श्रीकृष्ण पाण्डवों का दूत बनकर कौरवों के दरबार में पहुंचे। नेत्रहीन धृतराष्ट्र के समझाने के बावजूद भी दुर्योधन ने उन्हें बंदी बनाने का आदेश दे दिया। दुर्योधन के इस दुस्साहस पर क्रोधित होकर श्रीकृष्ण ने अपना अलौकिक रूप दिखाया। धृतराष्ट्र की दृष्टि लौट आई पर उन्होंने श्रीकृष्ण से आग्रह किया कि मुझे फिर से अंधा कर दिया जाए क्योंकि मैं कुछ ओर देखना नहीं चाहता। चित्र में राज परिवार के सदस्यों, दरबारियों व आम लोगों से खचा–खच भरे कौरव दरबार का चित्रण है, जिससे धृतराष्ट्र सिंहासन पर बैठे हैं ओर सामने श्रीकृष्ण दूत बनकर बैठे है। दुर्योधन गुस्से में खड़े होकर एक हाथ से इशारा करते हुए अपने सैनिकों को श्रीकृष्ण को बंदी बनाने का आदेश दे रहे हैं। उनके दूसरे हाथ में तलवार है। श्रीकृष्ण शान्ति से बैठे है और युधिष्ठिर को भी क्रोधित होने से रोक रहे हैं। सम्पूर्ण चित्र में परिपेक्ष्य का उचित उपयोग कर दरबार के वैभव्य का बड़ा ही भव्य चित्रण किया गया है दरबार का अंदरूनी हिस्सा, पात्रों की वेशभूषा, उनके कपड़ों पर पड़ी सलवटें आदि बेहद सटीक व सूरूचिपूर्ण है। सभी मुख्य पात्रों की मुद्रायें, भाव–भंगिमाएं, ऊर्जावान व गतिशील हैं जो सारे चित्र में ऊर्जा का संचार करती हैं।

गरीबी

गली–गली घूमकर और गा–बजाकर अपना और अपने बच्चों का जीवन–यापन करने वाली स्त्री का हृदय–स्पर्शी चित्रण 'गरीबी' नामक चित्र के नाम से चित्रित है। चित्र में एक बैठी हुई मुद्रा में अधेड़ स्त्री चित्रित है जिसके एक हाथ में वाद्ययंत्र है जिसे वह बजा रही है तथा दूसरा हाथ घुटनों पर लेटे शिशु को संभालने में व्यस्त है। पास में ही दो बच्चे बैठे है जो अपने आप में ही व्यस्त है। नीचे बैठी छोटी सी लड़की की मुद्रा और चेहरे पर छाई पीड़ा और दुख परिवार की दयनीय स्थिति को प्रदर्शित करते हैं। चित्र की पृष्ठभूमि में उजली दीवार सामने बैठे पात्रों के गहन रंगों से सवर्था विपरीत है। जो परिवार की दयनीय स्थिति को ओर अधिक उभारती है।

शिशु के सफेद कपड़े दीवार के उजले रंग को संतुलित करते हैं। इस चित्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस चित्र में गरीबी जैसे संवेदनापूर्ण विषय का बहुत सच्चा व सादगीभरा चित्रण हुआ है। (चित्र सं0–3)

विश्वामित्र मेनका

ऋषि विश्वामित्र भारतवर्ष के महान् सप्तऋषियों में से एक है। चित्र में रामायण की उस घटना का चित्रण है। जब तपस्वी विश्वामित्र की तपस्या से परेशान होकर देवताओं ने उसे भंग करने के लिए स्वर्ग की एक अप्सरा मेनका को भेजा। वे मेनका पर मुग्ध हो गए। मेनका के साथ रहते–रहते जब दस वर्ष बीत गए तो उनका मोह भंग हो गया। उन्हें बहुत ग्लानी हुई उन्होंने मेनका को वापस भेज दिया और स्वयं घोर तपस्या में लीन हो गए। इस चित्र में एक सुन्दर वन में सिंहाचर्म पर बैठे विश्वामित्र को रिझाने का प्रयास करती मेनका को दिखाया गया है। मेनका की मुद्रा और चरित्र–चित्रण कुछ कमजोर जान पड़ता है।

अगर हम 'विश्वामित्र–मेनका' (चित्र सं0–4) तथा 'अर्जुन और सुभद्रा' (चित्र सं0–5) चित्र का बारीकी से निरीक्षण करते हैं तो हमे मेनका और सुभद्रा में कुछ भिन्नता दिखाई नहीं पड़ती है। दोनों के हाव–भाव एक जैसे प्रतीत होते है।

रवि वर्मा के चित्रों की रंग योजना सदैव आंखों के भाने वाली होती थे। प्रायः सभी चित्रों में चटख रंगों का अभाव है जो चित्रकार की शांत प्रकृति का द्योतक है। वे रंगों की छाया व प्रकाश से चेहरों तथा भाव मुद्रओं को अंकित करते थे। उनकी आकृतियों में रंग प्रमुख हैं रेखाएं नहीं। गहरे से हल्के होने अथवा छाया प्रकाश की प्रवृति उनके प्रायः सभी चित्रों में परिलक्षित है।

अक्टूबर, 2007 में राजा रवि वर्मा द्वारा बनाई गई एक ऐतिहासिक कलाकृति, जो भारत में ब्रिटिश राज के दौरान ब्रितानी राज के एक उच्च अधिकारी और महाराज की मुलाकात को चित्रित करती है, 1.24 मिलियन डॉलर में बिकी इस पेंटिंग में श्रावणकोर के महाराज और उनके भाई को मद्रास के गर्वनर जनरल रिचर्ड टेम्पल ग्रेनविले को स्वागत करते हुए दिखाया गया है। सन् 2013 में बुद्ध ग्रह पर एक क्रेटर (ज्वालामुखी पहाड़ का मुख) का नाम भी राजा रवि वर्मा के नाम पर ही रखा गया। सन् 2014 में हिंदी फिल्मों के चर्चित निर्माता–निर्देशक केतन मेहता ने राजा रवि वर्मा के जीवन पर एक फिल्म बनाई जिसमें राजा रवि वर्मा की भूमिका अभिनेता रणदीप हुड्डा ने तथा अभिनेत्री की भूमिका नंदना सेन ने निभाई। हिंदी और अंग्रेजी भाषा में एक ही साथ प्रसारित इस फिल्म का अंग्रेजी नाम 'कलर ऑफ पैशन्स' और हिन्दी में इसे 'रंग रसिया' नाम दिया गया। मलयालम फिल्म 'मंक रामंजू' में भी राजा रवि वर्मा का जीवन दिखाया गया है। मशहूर चल चित्रकार संतोष सिवान ने इस फिल्म में राजा रवि वर्मा का किरदार निभाया है। (चित्र सं0–4)

मराठी बोर्ड की मराठी पुस्तक में 'अपूर्व भेंट' नामक अध्याय के अन्तर्गत राजा रवि वर्मा और स्वामी विवेकानंद की मुलाकात को दर्शाया गया है। भारतीय कला में उनके महान योगदान को देखते हुए केरल सरकार ने 'राजा रवि वर्मा पुरस्कारम्' की स्थापना की जो कला और संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए हर साल दिया जाता है।

विश्व की सबसे महंगी साड़ी भी इसी महान चित्रकार के चित्रों की नकल से सुसज्जित है। 12 रत्नों व धातुओं से सुसज्जित, 40 लाख रू की कीमत की यह साड़ी 'लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' में दुनिया की सबसे महंगी साड़ी के तौर पर शामिल है।[6]

2 अक्टूबर सन् 1906 को कला कर्म करते हुए त्रिवेन्द्रम के निकट आर्टिट्रंगल में राजा रवि वर्मा दिवंगत हुए और उनके साथ ही उनकी शैली का भी अंत हो गया। रवि वर्मा की मृत्यु के बाद भारतीय कला में एक नवीन युग का आरम्भ हुआ जिसे पुनर्जागृति काल कहा जाता है। अनेकों आलोचकों की आलोचनाओं के बाद भी इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि उन्होंने भारतीय कला के लिए अनेकों उपलब्धियां अर्जित की। उन्होंने तैल रंग चित्रण पद्वति पर प्रभुता हासिल की और अपने चित्रों के माध्यम से भारतीय धर्म पुराण और साहित्य को पुनः स्थापित किया और उसे एक ओर तो भारत के घर–घर तक पहुंचाया तो दूसरी ओर उसे अंग्रेज अधिकारियों से सम्मान दिलाया। भारतीय चित्रकला के इतिहास में 'पितामह' कहलाने वाले राजा रवि वर्मा के योगदान को हम कभी नहीं भुला पाएंगे। अतः इनकी चित्र सम्पदा अनेकों युगों तक नई पीढ़ी का मार्ग–दर्शन करती रहेगी।

निष्कर्ष

उनकी कला शैली को लेकर विभिन्न विद्धानों में मतभेद है कुछ विद्धानों का मत है कि राजा रवि वर्मा की मृत्यु के साथ ही उनकी कला शैली का भी अंत हो गया। लेकिन आज भी बहुत से कलाकार उनकी शैली का अनुसरण कर रहे है। इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि उन्होंने भारतीय कला के लिए अनेकों उपलब्धियां अर्जित कर कला को एक नई दिशा की ओर परिवर्तित किया। भारतीय चित्रकला के इतिहास में पितामह कहलाने वाले राजा रवि वर्मा ने अपने चित्रों के माध्यम से भारतीय धर्म पुराण और साहित्य को कला के माध्यम से पुनः स्थापित कर भारत के घर–घर तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *गोस्वामी, डॉ0 प्रेमचन्द, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर द्वितीय संस्करण–2006, पृ0 सं0–9*
2. *https://www.culturalindia.net*
3. *Chaitantya, Krisha, Ravi Verma, Lalit Kala Akademi New Delhi Edition, 1984,Page no.1.*
4. *www. the Famous People.com.*
5. *प्रदीप, डॉ0 किरण, भारतीय आधुनिक कला (आकृति–3) कृष्णा प्रकाशन मीडिया, (प्रा0) लि0, मेरण, पृ0 सं0–1.19*
6. *www.itshindi.com/raja-ravi-verma.htwl*

रंगीन चित्र

चित्र संख्या–1

चित्र संख्या–2

चित्र संख्या–3

चित्र संख्या–4

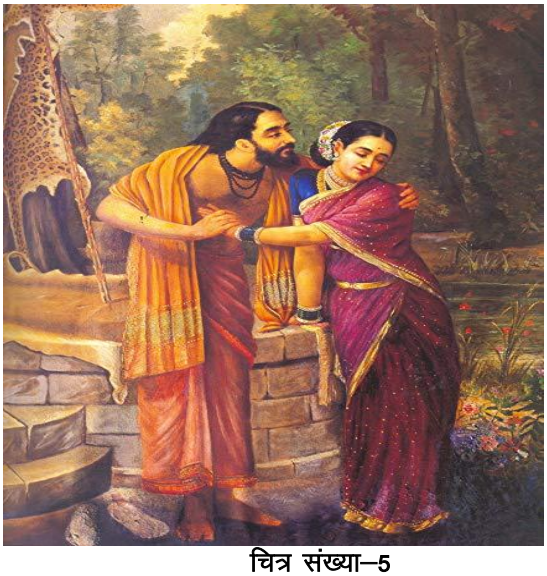

चित्र संख्या–5